Volume 2; Issue 4
October to December 2025
E-ISSN: 3048-6742

Sanskriti-Samvahika
संस्कृति-संवाहिका

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly Journal

Editor-in-Chief
Dr. Ashwini Devi

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका

E-ISSN: 3048-6742

https://sanskritisamvahika.in

Volume 2; Issue 4; October to December, 2025; Page No. 11-20

Peer Review, Indexed and Refereed Journal

चाणक्य नीति में मानवीय मूल्य एवं साम्प्रतिक प्रासंगिकता

डॉ0 आरती सरोज

असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत

आर्य कन्या डिग्री कॉलेज,

प्रयागराज

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र में चाणक्य नीति में मानवीय मूल्य एवं उसकी साम्प्रतिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया है। मानवीय मूल्य किसी भी राष्ट्र के आधारतत्त्व होते हैं, जिससे समाज उत्तरोत्तर उन्नति करता है। यदि संसार में इसका ह्रास होगा तो निश्चित रूप से संसार में असंतुलन होगा और आपराधिक गतिविधियों की वृद्धि होगी। चाणक्य नीति मानवीय मूल्यों की महत्ता की स्थापना करती है। प्रकृत ग्रन्थ का यह सुविचार है कि मानवीय मूल्यों का पालन करने वाले व्यक्ति का न केवल इहलौकिक कल्याण होता है अपितु पारलौकिक कल्याण भी सिद्ध होता है। मानवीय मूल्यों के पालन से 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना भी प्रदर्शित होती है, जो भारत की पुरातन एवं समृद्ध परम्परा को प्रदर्शित करता है। सम्प्रति भारतीय समाज एवं समस्त संसार को इसकी नितान्त, अनिवार्य आवश्यकता है तभी सार्वभौमिक कल्याण एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना चरितार्थ होती दिखायी देगी।

प्राचीनकाल से ही मनुष्य एक सामाजिक एवं चिन्तनशील प्राणी है। यही प्रवृत्ति उसे नैतिक–अनैतिक, सही–गलत एवं सत्य–असत्य का ज्ञान कराने को प्रेरित करती है। फलस्वरूप मानवीय मूल्यों का प्रादुर्भाव होता है। मानवीय मूल्य समाज का मूल होने के साथ ही मानवता की कसौटी हैं। यह मानव जीवन को दिशा–निर्देश प्रदान करते हुए एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए हमारे व्यक्तित्व का निर्माण कर सम्पूर्ण जीवन मार्गदर्शन करते रहते हैं। इन मूल्यों के बिना हमारा जीवन अस्त–व्यस्त होकर अराजकता एवं अज्ञानतारूपी अंधकार के गहरे गर्त में विलीन हो जायेगा।

मूल्य विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव–मूल्य परिवर्तित हो जाते हैं। जैसे– मानवीय मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, न्यायिक मूल्य, व्यावसायिक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य, भौतिक मूल्य, मनोवैज्ञानिक मूल्य एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य इत्यादि। इसके अतिरिक्त सत्य, ईमानदारी, आत्मनिर्भरता, निडरता, मानवता, प्रेम, भाईचारा, दृढ़ता, आनन्द, शान्ति, स्वतंत्रता, निष्पक्षता, सम्मान, आदि मुख्य मानवीय मूल्यों की श्रेणी में आते हैं।

वर्तमान में मूल्य से तात्पर्य–कीमत, भाव, तथा दाम आदि से है, जिसका मानव जीवन के मूल्यों के आचरणात्मक स्वरूप से कोई सम्बन्ध नहीं है। प्राचीनकाल से ही मानवीय मूल्य समाज की दशा एवं दिशा का संचालन करते हुए एवं मार्गदर्शन करते हुए चले आ रहे हैं। वैदिक वाङमय एवं इससे अनुप्राणित आधुनिक कृतियाँ इसके श्रेष्ठ प्रमाण हैं। मार्गदर्शन के इस क्षेत्र में संस्कृत–साहित्य अग्रणी भूमिका का निर्वहन करता है। संस्कृत–साहित्य के ग्रन्थों में मानवीय मूल्यों का उत्कृष्टतम स्वरूप प्राप्त होता है। संस्कृत–साहित्य के नीतिपरक ग्रन्थों की कोटि में आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्यकृत 'चाणक्य नीति' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इस ग्रन्थ में जीवन को सुखमय, सफल एवं सम्पन्न बनाने के लिए उपयोगी अनेक विषयों पर प्रकाश डाला गया है। यह ग्रन्थ समाज में शान्ति, न्याय, सुशिक्षा एवं सर्वतोन्मुखी प्रगति सिखाने वाला ज्ञान का भण्डार है।

मानव जीवन की उत्कृष्टता का वर्णन करते हुए 'शंकराचार्य' अपने ग्रन्थ 'विवेक चूड़ामणि' में कहते हैं कि—

दुर्लभम् त्रयमेवै तद्दैवानुग्रह हेतुकम्।[1]

मनुष्यत्वम् मुमुक्षत्वम् महापुरुषसंश्रयः।।

'श्रीमद्भगवतगीता' के तृतीय अध्याय 'कर्मयोग' के 35वें श्लोक में भी परोपकार और निष्काम सेवा को इस प्रकार बताया गया है—

श्रेयान् स्वधर्मों निपुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्,[2]

स्वधर्मे निधनम् श्रेयः परधर्मो भयावहः।।

भारतीय ज्ञान की वृहद् परम्परा में मानव ने भौतिक जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन को अधिक उत्कृष्ट माना एवं मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है। आचार्य चाणक्य अपने ग्रन्थ में यह स्वीकार करते हैं कि यदि मानव को मोक्ष की कामना है तो उसे सर्वप्रथम मानवीय मूल्यों का पालन करना होगा। अधोलिखित श्लोक से इसकी सूचना प्राप्त होती है।

मृक्तिमिच्छसि चेतात विषयान् विषवतत्यज्।[3]

क्षमाऽऽर्जवदयाशौचं सत्यं पीयूषवत् पिब।।

अर्थात् हे भाई! यदि तुम्हें मोक्ष की कल्पना है तो विषयों को विषय के समान समझकर त्याग दो और क्षमा (सहिष्णुता, धैर्य, तितिक्षा), आर्जव (सरलता, विनम्रता, ईमानदारी, निष्कपटता, उदारता), दया, पवित्रता और सत्य का अमृत के समान पान करो।

'शीलं परमभूषणम्' शील ही मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण है। आचार्य चाणक्य यह कहते हैं कि शील स्वभाव से युक्त होने पर कुरूप व्यक्ति भी सुन्दर होता है।

दरिद्रता धीरतया विराजते,

कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते।

कदन्नत्र चोष्णतया विराजते,

कुरूपता शीलतया विराजते।।[4]

अर्थात् धैर्य होने से दरिद्रता भी कष्टदायक नहीं होती, साफ रहने पर मामूली वस्त्र भी अच्छे लगते हैं, बासी भोजन भी गर्म होने पर रुचिकर लगता है तथा शील स्वभाव से कुरूपता भी सुन्दर लगती है।

मानवीय मूल्य मनुष्य के जीवन में आधार के रूप में कार्य करते हैं। इनके अभाव में व्यक्ति का जीवन पशु के समान हो जायेगा, जो निरुद्देश्य होकर संसार में भ्रमण करता रहेगा। इस कथन की पुष्टि दसवें अध्याय से होती है।

येषां न विद्या न तपो न दानं, न चापि शीलं च गुणो न धर्मः।[5]
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

मानवीय मूल्य दिशा–निर्देश करते हैं, किन्तु इन मूल्यों का उपदेश सुपात्र व्यक्ति को ही देना चाहिए, क्योंकि मूढ़ एवं विवेकहीन व्यक्तियों पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, जो व्यक्ति अन्दर से खोखले हैं और जिनके भीतर समझने की शक्ति नहीं है, ऐसे व्यक्तियों पर उपदेश का कोई प्रभाव नहीं होता, क्योंकि वे समझने की शक्ति के अभाव के कारण कुछ समझ नहीं पाते। जैसे मलयाचल पर उगने पर भी तथा चन्दन का साथ रहने पर भी बाँस सुगन्धित नहीं हो जाते, ऐसे ही विवेकहीन व्यक्तियों पर भी सज्जनों के संग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

अन्तःसार विहीनानामुपदेशो न जायते।[6]
मलयाचलसंसर्गात् न वेणुश्चन्दनायते।।

आचार्य चाणक्य व्यक्ति के चार सहज गुण बताते हैं, (1) दानशीलता (2) प्रिय भाषण (3) शूरवीरता एवं (4) उचित–अनुचित का ज्ञान। ये व्यक्ति में अभ्यास द्वारा नहीं आता है।

दातृत्वं प्रियवक्तृत्वं धीरत्वमुचितज्ञता।[7]
अभ्यासेन न लभ्यन्ते चत्वारः सहजा गुणाः।।

संसार में सामान्यतया उस व्यक्ति को बलवान माना जाता है, जो शारीरिक रूप से हृष्ट–पुष्ट होता है, किन्तु आचार्य चाणक्य कहते हैं कि जिस व्यक्ति का तेज चमकता है वही वास्तविक बलवान है।

तेजो यस्य विराजते स बलवान् स्थूलेषु कः प्रत्ययः।।

आचार्य चाणक्य ने अपने नीतिग्रन्थ में सर्वाधिक रूप से दान की महिमा का वर्णन किया है। उनका मत है कि दान से ही अर्जित कीर्ति का क्षय नहीं होता है।

देयं भोज्यधनं सदा सकृतिर्थिर्नो सञ्चितव्यं कदा,[8.]

श्रीकर्णस्य बलेश्च विक्रमपतेरद्यापि कीर्तिः स्थिता।

अस्माकं मधु दानभोगरहितं नष्टं चिरात्सञ्चितं,

निर्वाणादिति पाणिपादयुगले घर्षन्त्यहो मक्षिकाः।।

अर्थात् पुण्यात्माओं का भोग करने योग्य धन, सदा दान देने के लिए ही होता है। वे कभी भी उसका संचय नहीं करते, क्योंकि दान देने के कारण ही दानवीर कर्ण, महाराज बलि और विक्रमादित्य की कीर्ति आज भी बनी हुई है। दान और भोग से रहित मधुमक्खियों का चिरकाल से संचित किया हुआ मधु नष्ट हो जाता है। अहो! 'हमारा मधु नष्ट हो गया' ऐसा सोचकर मधुमक्खियाँ अपने दोनों हाथ और पैरों को मलती हैं अर्थात् दुःख प्रकट करती हैं।

दान देना पुण्य का कार्य माना जाता है। दान करने से मनुष्य का इहलौकिक एवं पारलौकिक कल्याण होता है। दान देने से मनुष्य को सद्गति प्राप्ति होती है। शास्त्रों में दान की अत्यधिक महत्ता बतायी गयी है। दान कई प्रकार के हो सकते हैं– धनदान, अन्नदान, वस्त्रदान, वेणीदान, रक्तदान, द्रव्यदान एवं अभयदान इत्यादि। दान मनुष्य के जन्म–जन्मान्तरों के अभ्यास का परिणाम होता है, जिससे मनुष्य प्रेरित होकर दानकर्म में संलग्न होता है।

जन्म–जन्मन्यभ्यस्तं यद् दानमध्ययनं तपः।[9]

तेनैवाऽभ्यासयोगेन तदेवाभ्यस्यते पुनः।।

जन्म जन्मान्तरों तक अभ्यास करने पर ही मनुष्य को दान, अध्ययन और तप प्राप्त होते हैं। इसी अभ्यास के योग से प्राणी बार–बार उनका अभ्यास करता है अर्थात् दान देता है, अध्ययन करता है और तपस्या करता है।

दान की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए आचार्य चाणक्य बताते हैं कि सभी यज्ञ, दान (अन्न, जल, वस्त्र और भूमिदान) बलि आदि नष्ट हो जाते हैं, किन्तु सुपात्र को दिया गया दान तथा अभयदान का फल कभी नष्ट नहीं होता।

क्षीयन्ते सर्वदानानि यज्ञहोमबलि क्रियाः।[10]

न क्षीयते पात्रदानमभयं सर्वदेहिनाम्।।

त्रयोदश अध्याय में आचार्य चाणक्य मनुष्य को विवेकशील होने का उपदेश देते हुए कहते हैं कि व्यक्ति को सोच–विचार करके ही किसी कार्य में प्रवृत्त होना चाहिए। बुद्धिमान और सज्जन व्यक्ति ऐसे ही अपना कार्य करते हैं।

कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी।[11]

तथापि सुधियाचार्यः सुविचार्येव कुर्वते।।

'चाणक्य नीति' यह निर्देश करती है कि मनुष्य को किसी भी प्रकार की सम्पत्ति पर अहंकार नहीं करना चाहिए। जो मनुष्य संसार की सभी वस्तुओं को नाशवान जानते हैं, वे कभी भी अहंकार नहीं करते, क्योंकि उन्हें यह बोध है कि इस पृथ्वी पर एक से बढ़कर एक दानी, तपस्वी, शूरवीर, विद्वान व नीतिनिपुण हैं।

दाने तपसि शौर्ये वा विज्ञाने विनये नये।[12]

विस्मयो न हि कर्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा।।

शील गुण से युक्त कुलीन मनुष्य निर्धन होने पर भी अपने शील गुण का परित्याग नहीं करता है–

छिन्नोऽपि चन्दनतरुर्न जहाति गन्धं,[13]

वृद्धोऽपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम्।

यन्त्रार्पितो मधुरतां न जहाति चेक्षु,

क्षणोऽपित न त्यजति शीलगुणान्कुलीनः।।

अर्थात् आचार्य चाणक्य कहते हैं कि कट जाने पर भी चन्दन का वृक्ष सुगन्ध नहीं छोड़ता। बूढ़ा हो जाने पर भी हाथी अपनी कामक्रीड़ाओं को नहीं छोड़ता। कोल्हू में पेरी जाने पर भी ईख मिठास को नहीं छोड़ देती। इसी प्रकार गरीब हो जाने पर भी कुलीन अपने शील गुणों को नहीं छोड़ता है।

और भी

विवेकिनमनुप्राप्ता गुणा यति मनोज्ञताम्।[14]

सुतरां रत्नमाभाति चामीकरनियोजितम्।।

अर्थात् गुण भी योग्य विवेकशील व्यक्ति के पास जाकर ही सुन्दर लगता है (विकसित हो जाता है) क्योंकि सोने में जड़े जाने पर ही रत्न अत्यन्त सुन्दर लगता है।

षोडश अध्याय में आचार्य चाणक्य कहते हैं कि व्यक्ति अपने मानवीय गुणों से बड़ा बनता है। गुणहीनता किसी व्यक्ति को अस्थायी लाभ तो दे सकती है परन्तु स्थायी नहीं। क्योंकि गुणहीन का चरित्र समय आने पर स्वतः ही प्रकट हो जाता है। इसकी पुष्टि अधोलिखित श्लोक से होती है–

गुणैरुत्तमतां यातिनोच्चैरासनसंस्थितः।[15]

प्रासादशिखरस्थोऽपि काकः किं गरुड़ायते।।

अर्थात् गुणों, सदाचार और चरित्र से ही मनुष्य बड़ा बनता है न कि किसी ऊँचे आसन पर बैठ जाने से। राजमहल के शिखर पर बैठ जाने पर भी कौआ गरुड़ नहीं बनता है।

परोपकारी मनुष्य की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है और उसकी सभी विपत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं तथा उन्हें सम्पत्ति प्राप्त होती है।

परोपकरणं येषां जागर्ति हृदये सताम्।।[16]

नश्यति विपदस्तेषां सम्पदः स्युः पदे–पदे।।

मानवीय गुण सज्जनों में ही दिखायी देते हैं। धर्म में तत्परता, मुख में मुखरता, दान देने में अत्यन्त उत्साह का होना, मित्रों के प्रति निष्कपटता, गुरु के प्रति नम्रता, अन्तःकरण में समुद्र के समान गम्भीरता, आचार में पवित्रता, गुणों में रसिकता, शास्त्रों में विज्ञता, रूप में सुन्दरता और शिवभक्ति, ये बातें सज्जनों में ही दृष्टिगोचर होती है–

धर्मे तत्परता मुखे मधुरता दाने सुमत्साहता,[17]
मित्रेऽवञ्चकता गुरौ विनयता चित्तेऽपि गम्भीरता।
आचारे शुचिता गुणे रसिकता शास्त्रेषु विज्ञातृता,
रूपे सुन्दरता शिवे भजनता, त्वय्यस्ति भो राघव।।

आचार्य चाणक्य मानवीय मूल्यों की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं कि मानवीय मूल्यों को धारण करने वाले सज्जनों से ही समस्त पृथ्वी टिकी हुई है अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी ऐसे ही सज्जनों के कारण सद्मार्ग पर संचरित होती हुई नित्य–निरन्तर प्रगतिमान है।

दाक्षिण्यं स्वजने दया परजने शाठ्यं सदा दुर्जने,[18]
प्रीतिः साधुजने स्मयः खलजने विद्वज्जने चार्जवम्।
शौर्यं शत्रुजने क्षमा गुरूजने नारीजने धृष्टता,
इत्थं ये पुरुषा कलासु कुशलास्तेष्वेव लोकस्थितिः।।

इस प्रकार मानव–मूल्यों को साँचे में ढालकर जीवन को सार्थक बनाना ही हमारे सनातन साहित्य का एकमात्र ध्येय रहा है। इसी प्रकार से चाणक्य नीति का मुख्य विषय मानव मात्र को जीवन के प्रत्येक पक्ष की व्यावहारिक शिक्षा देना है। इसमें मुख्य रूप से धर्म, संस्कृति, न्याय, शान्ति, सुशिक्षा एवं सर्वतोन्मुखी मानव जीवन की प्रगति की झाँकियाँ प्रस्तुत की गयी हैं। इस महत्त्वपूर्ण नीतिपरक ग्रन्थ में जीवन–सिद्धान्त और जीवन–व्यवहार तथा आदर्श और यथार्थ का बड़ा ही सुन्दर समन्वय प्राप्त होता है। रीति–नीति विषयक बातों का जैसा व्यावहारिक चित्रण यहाँ प्राप्त होता है, अन्यत्र दुर्लभ ही है। इसीलिए सम्पूर्ण विश्व साहित्य में यह ग्रन्थ सम्मानपूर्ण स्थान रखता है।

वर्तमान परिदृश्य जो स्वार्थ से परिपूर्ण है तथा अज्ञानांधकाररूपी समुद्र में डूबे हुए राजनीतिक परिदृश्य में मात्र चाणक्य नीति ही ज्ञानरूपी अमृत की वर्षा कर सम्पूर्ण राष्ट्र का पथ प्रशस्त कर 'वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना चरितार्थ करने की क्षमता रखती है। यह हमें राजनीतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मुक्ति का मार्ग दिखा सकता है। इसके मूल्यों का चिन्तन कर भारत की वास्तविक परम्परा को समृद्ध किया जा सकता है। चाणक्य नीति के अध्ययन से राजनैतिक समझ के विकास के साथ–साथ व्यक्ति में सदाचारी, व्यवहारकुशल, धर्मनिष्ठ एवं कर्मशील मानव बनने की तथा उसके समुचित विकास की पर्याप्त सम्भावनाएँ हैं। इसलिए यह नीति–ग्रन्थ अद्यापि प्रासंगिक उपादेय एवं मानवमात्र के कल्याण की भावना से ओत–प्रोत होने के साथ–साथ ही सर्वदा मानव को चिन्तनशील प्राणी बनाकर उसका सार्वभौमिक कल्याण एवं मागदर्शन करता रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. विवेकचूड़ामणि (शंकराचार्य)।
2. श्रीमद्भगवत्गीता 3/35
3. चाणक्य नीति 9/1, पृ0 92।
4. चाणक्य नीति 9/14, पृ0 95।
5. चाणक्य नीति 10/7, पृ0 97।
6. चाणक्य नीति 10/8, पृ0 97।
7. चाणक्य नीति 11/1, पृ0 101।
8. चाणक्य नीति 11/18, पृ0 105।
9. चाणक्य नीति 16/20, पृ0 132।
10. चाणक्य नीति 16/14, पृ0 131।
11. चाणक्य नीति 13/17, पृ0 116।
12. चाणक्य नीति 14/8, पृ0 118।

13. चाणक्य नीति 15／18, पृ0 126।
14. चाणक्य नीति 16／9, पृ0 129।
15. चाणक्य नीति 16／6, पृ0 129।
16. चाणक्य नीति 17／14, पृ0 136।
17. चाणक्य नीति 12／14, पृ0 110।
18. चाणक्य नीति 12／3, पृ0 106।